वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 21 247 अंक : 7

प्रवचनसार पद्यानुवाद

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

यद्यपि उत्पादबिन व्यय व्यय बिना उत्पाद है।
तथापी उत्पादव्ययथिति का सहज समवाय है ।।17।।
सभी द्रव्यों में सदा ही होंय रे उत्पाद-व्यय ।
ध्रुव भी रहे प्रत्येक वस्तु रे किसी पर्याय से ।।18।।
अतीन्द्रिय हो गये जिनके ज्ञान सुख वे स्वयंभू।
जिन क्षीणघातिकर्म तेज महान उत्तम वीर्य हैं ।।19।।
अतीन्द्रिय हो गये हैं जिन स्वयंभू बस इसलिए।
केवली के देहगत सुख-दु:ख नहीं परमार्थ से ।।20।।
केवली भगवान के सब द्रव्य गुण-पर्याययुत।
प्रत्यक्ष हैं अवग्रहादिपूर्वक वे उन्हें नहीं जानते ।।21।।
सर्वात्मगुण से सहित हैं अर जो अतीन्द्रिय हो गये।
परोक्ष कुछ भी हैं नहीं उन केवली भगवान के ।।22।।
यह आत्म ज्ञानप्रमाण है अर ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है।
हैं ज्ञेय लोकालोक इस विधि सर्वगत यह ज्ञान है ।।23।।
अरे जिनकी मान्यता में आत्म ज्ञानप्रमाण ना।
तो ज्ञान से वह हीन अथवा अधिक होना चाहिए ।।24।।

आत्मा का भान ही प्रत्याख्यान

भगवान आत्मा त्रिकालध्रुवरूप शुद्ध द्रव्यवस्तु अक्रियस्वरूप है। परिणमनरूप या बदलनेरूप क्रिया इसमें नहीं है। परिणमना या बदलना यह क्रिया तो पर्याय में है। ऐसा त्रिकाली ध्रुव अक्रियस्वरूप आत्मा निश्चय है और उसका अवलम्बन लेकर मोक्षमार्ग साधना व्यवहार है। राग से भिन्न अन्दर सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान ध्रुव पड़ा है, वह अक्रिय है, परिणमन करने की क्रिया उसमें नहीं है। ऐसे ध्रुव अक्रियस्वरूप भगवान आत्मा का अवलम्बन लेकर उसी में स्थित होना मोक्षमार्ग है ह्न यह निश्चय मोक्षमार्ग अध्यात्म का व्यवहार है।

शुद्ध द्रव्यवस्तु निश्चय तथा उसके आश्रय से मोक्षमार्ग प्रगट होना व्यवहार है। शुभरागरूप व्यवहार मोक्षमार्ग की यहाँ बात नहीं है। यहाँ तो केवलज्ञानस्वभावी आनन्दकन्द प्रभु, शुद्ध, ध्रुव, अक्रियवस्तु; जिसमें बदलाव या परिणमन नहीं है, वह निश्चय है और पर्याय में जो निश्चयमोक्षमार्ग प्रगट होता है, वह व्यवहार है। भाई ! ऐसा मार्ग है। चौरासी के अवतार में रखड़ते हुए इन संसारी प्राणियों को यह बात सुनने को आज तक मिली ही नहीं है।

जिसप्रकार शक्कर मिठासस्वरूप, अफीम कडवाहटस्वरूप तथा नमक खारेपण स्वरूप है; उसीप्रकार भगवान आत्मा ज्ञानस्वरूप है, ज्ञाता-दृष्टा है। ऐसे ज्ञानस्वभावी आत्मा का भान करके, श्रद्धान करके उसमें ठहरना या स्थित होना ही प्रत्याख्यान है। तथा इस निर्मल वीतरागी परिणति को ही चरित्र व मोक्षमार्ग कहते हैं।

अहाहा ! तीनों काल जिसमें जन्म-मरण व जन्म-मरण के भाव का अभाव है, ऐसा भगवान आत्मा है। किसी को ऐसा लगे कि यह क्या कहते हैं ? परन्तु भाई ! यह तो अपने निजघर की बात है, निजघर में तो ज्ञान व आनन्द का निधान पडा है। यह हाड़ व मांस की पोटलीरूप शरीर तो परवस्तु है। हिंसा, चोरी आदि पापभाव है व दया-दान आदि पुण्य भाव हैं। इन सबसे तू अर्थात् भगवान आत्मा भिन्न है। ऐसे आत्मा का भान कर उसमें ठहरना ही प्रत्याख्यान है।

ह्न प्रवचनरत्नाकर भाग-2, पृष्ठ-89-90

आत्मा की उपासना कैसे होती है ?

पूज्यपाद आचार्य देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 22 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

संयम्य करणग्राममेकाग्रत्वेन चेतसः ।
आत्मानमात्मवान्ध्यायेदात्मनैवात्मनि स्थितम् ।।22।।

मन की एकाग्रता द्वारा इन्द्रियों के समूह को वश करके अपने में अर्थात् आत्मा में स्थित आत्मा को आत्मा के द्वारा ही ध्याना चाहिये। यही आत्मा की उपासना है।

(गतांक से आगे)

निमित्त-उपादान, निश्चय-व्यवहार, क्रमबद्धपर्याय आदि सभी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण एक स्वसंवेदन में ही आ जाता है। इन सिद्धान्तों का निर्णय करने के लिए 'मैं तो ज्ञाता-दृष्टा हूँ, शुभ-अशुभरूप रागादिभावों का कर्त्ता नहीं हूँ, मैं तो मात्र ज्ञायक हूँ' ह्न ऐसा पक्का निर्णय होना चाहिए। जो होता है, उसमें करना क्या है, मात्र जानना है। शरीरादिक क्रिया करना क्या है, उसे भी मात्र जानना ही है तथा जानने का जो राग हुआ, उसमें भी क्या करना है, उसे भी मात्र जानना ही है । बस ! एकमात्र जानना, जानना और जानना ही जीवन का कार्य होना चाहिए।

अहा ! आत्मा परमात्मशक्तिरूप विद्यमान है, वह तो अपनी स्व-परप्रकाशक शक्तिसहित है। ज्ञेय दो प्रकार के होते हैं – स्वज्ञेय और परज्ञेय। आत्मा निजरूप स्वज्ञेय और परद्रव्य तथा परभावरूप परज्ञेय दोनों को ही जानता है।

थोड़ी ही सही, पर सत्य बात समझ में आवे तो उसमे बड़ा लाभ होता है; किन्तु विपरीततारूप अनेक बातें भी समझे तो उससे क्या लाभ? सत्स्वरूप वस्तु का एक भाव अच्छा लगे तो सभी भाव अच्छे लगते है। ज्ञानार्णव ग्रन्थ में कहा है कि भगवान द्वारा प्रतिपादित एक बात भी समझ में आवे तो सभी बातें समझ में आ जाती है।

स्त्री का शरीर प्राप्त होने से आत्मा स्त्री नहीं हो जाता और पुरुष का शरीर प्राप्त होने

पर आत्मा पुरुष नहीं हो जाता। उसीप्रकार पर्याय में राग होने पर भी आत्मा रागी नहीं हो जाता। आत्मा का स्वरूप ही कोई अद्भुत है। भगवान सर्वज्ञदेव कहते हैं कि आत्मा रागरहित त्रिकाल वीतरागभावस्वरूप है – ऐसे अपने आत्मस्वभाव को, अपनी आत्मा को तू स्वीकार कर ! ना मत कर !

भगवान आत्मा चिदानन्द रत्नों की खान, देह-वाणी-मन तथा राग से परे, ज्ञान की जीवंत ज्योति है। उसे परद्रव्यों का बिल्कुल भी सहारा नहीं है – ऐसा प्रथम निर्णय करो, श्रद्धा करो और बाद में अंतर में एकाग्रता करने का प्रयत्न करो ह्न यही हित का मार्ग है। इसके अलावा मन्दिर बनवाने से, दान देने से, परद्रव्य की कोई भी क्रिया करने से अथवा शुभभाव करने से जो हित मानते हैं; वे मिथ्यादृष्टि हैं। मन्दिर आदि पुद्गल द्रव्य की रचना है। उनके करने योग्य राग भी आता है; किन्तु सब अपने-अपने कारण से होता है, उसमें स्वयं कर्त्ताबुद्धि करके अपना हित माने तो वह मान्यता मिथ्यात्व है।

परमार्थ से तो सर्वभाव अपने-अपने आधार से होते हैं, अन्य किसी परद्रव्य के आधार से आत्मा नहीं तथा आत्मा के आधार से कोई अन्य परद्रव्य नहीं हैं। सभी द्रव्य अपने-अपने आधार से हैं – यह बात स्वीकार करने में कठिन लगती है; किन्तु जो वस्तुस्वरूप है, वह तो स्वीकारना ही पड़ता है।

हलवा बनाना हो तो घी में आटे को सेंककर बाद में गुड़ का पानी डाला जाता है। गुड़ के पानी में आटा डालकर ऊपर से घी डालने से हलवा नहीं बनता; अत: वस्तु का जैसा स्वरूप है, उसे वैसा स्वीकारने से ही लाभ होता है।

यहाँ इष्टोपदेश शास्त्र की 22 वीं गाथा चल रही है। शिष्य प्रश्न पूछता है कि हे प्रभो ! आत्मा के हित का उपाय क्या है ? तब पूज्यपादस्वामी उत्तरस्वरूप कहते हैं ह्न

भगवान आत्मा पूर्ण अतीन्द्रिय आनन्दस्वरूप है। अज्ञानी जीव का उपयोग इन्द्रियों की तरफ एकाग्र हुआ है। उसे वहाँ से हटाकर स्व-सन्मुख करना चाहिए। अतीन्द्रिय आनन्दस्वरूप की दृष्टि करने से अर्थात् उसमें ही एकाग्र होने से इस जीव के हित का उपाय होता है और यही इष्टोपदेश है।

पाँच इन्द्रिय और मन की ओर का विकल्प छोड़कर स्वसन्मुख होकर निजस्वरूप में एकाग्रता करना ही हित का उपाय है। उसका फल पूर्ण आनन्द और केवलज्ञान है। पुण्य-पाप में और बाह्य विषयों में यह जीव अनादिकाल से एकाग्रता करता रहा है और

वर्तमान में भी कर रहा है; किन्तु यह उसे अहितकर है, इसका फल तो संसार ही है; इसीलिए जिसे अपने हित की भावना प्रबल हो रही हो, उसे आचार्य पूज्यपादस्वामी उपदेश देते है कि तू इन्द्रियों की एकाग्रता छोड़कर अपने मन को आत्मा में एकाग्र कर!

ज्ञानी और अज्ञानी कोई भी जीव शरीर-वाणी-मन या कर्म आदि परद्रव्यों में एकाग्रता नहीं कर सकता; क्योंकि परद्रव्यों की सत्ता ही भिन्न है; किन्तु अज्ञानी जीव पर की ओर लक्ष्य करके शुभाशुभभावों में एकाग्रता कर रहा है। निगोद से लेकर द्रव्यलिंगी साधु होकर नवमें गैवेयक में जन्मा हुआ प्रत्येक अज्ञानी अनादि से शुभ-अशुभ भावों में ही एकाग्रता कर रहा है और उसमें ही अपना हित मान रहा है। इसतरह अज्ञानी जीव ज्ञानानन्दस्वरूप निजात्मा की एकाग्रता छोड़कर मात्र पर सन्मुख उपयोग करके उसमें ही अपने हित की कल्पना करता रहा है।

तीन लोक और तीन काल में कोई भी जीव परद्रव्य की क्रिया नहीं कर सकता, यह तो मात्र उस ओर उपयोग करके शुभाशुभ भाव में एकाग्रता कर सकता है, जो इसे कदापि हितकर नहीं है। एक निज आत्मा की एकाग्रता करने के बदले अन्य परद्रव्यों की एकाग्रता कर रहा है, उसी ओर तल्लीन हो रहा है; किन्तु इन सबको छोड़कर एक शुद्ध निज आत्मा में एकाग्रता करना ही हित का उपाय है; इसी का नाम सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है तथा उसे प्रकट करने के लिये ही संतों ने यह इष्ट-उपदेश दिया है।

एकाग्रता दो जगह की जा सकती है – एक तो स्वयं आत्मा में ही मन को जोड़ना तथा दूसरा किसी द्रव्य का या उसकी पर्याय का लक्ष्य करना। इन दोनों में से आत्मा में मन को जोड़ना ही एकाग्रता का सम्यक् स्वरूप है।

'जिसे स्वयं का हित करना है, वह कैसे करे ?' इसकी यहाँ बात चल रही है। हित कहो, धर्म कहो या सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्रकटता कहो – सब एक ही बात है; इसीलिये यहाँ परद्रव्य एवं उसकी पर्याय से लक्ष्य हटाकर स्वयं की आत्मा का लक्ष्य करके उसमें एकाग्रता करने की बात कही है। **(क्रमश:)**

अहिंसा चैनल पर डॉ. भारिल्ल

प्रतिदिन प्रात: 8.30 से 9.00 बजे तक अहिंसा चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। जिज्ञासु भाई-बहिन अवश्य सुनें। – प्रबन्ध सम्पादक

नियम के साथ सार शब्द क्यों ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की तीसरी गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णियमेण य जं कज्जं तं णियमं णाणदंसणचरित्तं।
विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं ॥३॥

नियम से जो करने योग्य हो, वह दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही नियम है। विपरीत के परिहार के लिये (ज्ञान-दर्शन-चारित्र से विरुद्ध भावों के त्याग के लिये) सार शब्द जोड़ा गया है।

(गतांक से आगे .....)

परमोत्कृष्ट स्वभाव से परिपूर्ण पारिणामिकभाव है और उसमें स्थित अनन्तचतुष्टयरूप सहजचेतना परिणाम कारणनियम है। इसको कारण कहकर यहाँ मुनिराज के राग और व्यवहार कारण का अभाव बताया है। व्यवहार तो कथन मात्र है, वास्तविक कारण नहीं है। अन्दर में जो सहज पारिणामिक त्रिकालभाव और उसका शुद्धचेतना परिणाम है, वही निश्चय कारण है और उसीकारण के आश्रय से मोक्षमार्गरूप कार्य प्रकट होता है।

जैसे त्रिकाल सामान्यध्रुव है, वैसे ही उसका वर्तमान भी ध्रुव है। यदि त्रिकालध्रुव का वर्तमान ध्रुव न हो तो वर्तमान में मोक्षमार्ग प्रकट होने की सामर्थ्य कहाँ से आयेगी?

प्रश्न – एक अभेद ध्रुव के दो भेद कैसे हो गए ?

उत्तर – जैसा सामान्यध्रुव है, वैसा ही विशेषध्रुव है, ऐसा कहकर उसकी पूर्णता बताई है। सामान्य और विशेष कहीं दो जुदा नहीं पड़ गए हैं। जैसा सामान्यध्रुव है वैसा ही उसका विशेषध्रुव है। ऐसा कहकर त्रिकाल और वर्तमान एकाकार अभेदस्वभाव को बताया है। द्रव्यदृष्टि के विषय में सामान्यध्रुव और विशेषध्रुव दोनों आ जाते हैं।

नीचे भूमि अच्छी हो, किन्तु ऊपर क्षारवाली हो तो उस पर वृक्ष नहीं उगता और यदि ऊपर नीचे दोनों उपजाऊ हों तो वृक्ष बराबर उगता है।

आत्मा में त्रिकाल ध्रुवस्वभाव तो शुद्ध है और उसका वर्तमान भी वैसा ही शुद्ध है, उसी में से मोक्षमार्ग प्रकट होता है। जैसा सामान्यध्रुव त्रिकाल है, वैसा ही उसका विशेष वर्तमानध्रुव है। विशेष का अर्थ यहाँ उत्पाद-व्ययवाली पर्याय नहीं है, किन्तु वर्तमान वर्तनेवाला ध्रुव है। त्रिकालशक्ति है, वह वर्तमान एकरूप ध्रुव है, उसके आश्रय से मोक्षमार्ग प्रकट होता है। यह कहकर अन्दर का आश्रय बताया है। बाहर में कोई मोक्षमार्ग का कारण है ही नहीं।

चैतन्य भगवान, ध्रुव ज्ञायकस्वरूप से परिपूर्ण परमपारिणामिकभाव है, उसमें सहज चेतना परिणाम भी वर्तमान है। अहो ! जब देखो तभी तुम्हारा कारण तुम्हारे पास विद्यमान ही पड़ा है, उस कारण को नया उत्पन्न नहीं करना पड़ता, उसके आश्रय से कार्य प्रकट हो जाता है। कारण शोधने के लिये कहीं जाना पड़े ह्न ऐसा नहीं है। ऐसे का ऐसा ध्रुव जब देखो तब वर्तमान में तुम्हारे पास ही पड़ा है। उसकी प्रतीति, ज्ञान और रमणता करने पर मोक्षमार्ग की पर्याय प्रकट हो जाती है। ध्रुव कारण तो त्रिकाल विद्यमान है और उसे पहचानने पर मोक्षमार्ग नवीन प्रकट होता है। मोक्षमार्ग तो कार्यनियम है और ध्रुव स्वभाव कारणनियम है। कारणनियम को करना नहीं पड़ता; वह तो त्रिकाल है। जब देखो तब अन्तर में वर्तमान में ही उपस्थित है। उसमें अन्तर्मुख होने पर कार्यनियम प्रकट होता है।

स्वभावरत्नत्रय दो प्रकार का है। एक त्रिकाल कारणरूप और दूसरा कार्यरूप। उसमें जो कार्यरूप रत्नत्रय है, वह मोक्षमार्ग है।

देखो ! टीका में अस्पष्टता नहीं रखी है, किन्तु गूढ़ भावों को अत्यन्त स्पष्ट करके हीरामाणिक पिरो दिये हैं। अज्ञानी न समझे अर्थात् ऐसा कहे कि टीका करके तो सरल करने के बजाय समझना कठिन कर दिया है तो उसे कौन समझाये ? अरे भाई ! गूढ़ रहस्यों को कितना सरल किया है; इसकी उसे खबर नहीं है। अन्तरचक्षु उन्मीलित हों तब खबर पड़े न ? तेरे अन्तर में भण्डार भरा है, उसे टीकाकार ने उद्घाटित किया है। आँख खोलकर देख तो सही।

प्रथम कारण नियम जो त्रिकाली है, उसकी पहिचान कराई ज्ञान-चारित्र ही कार्यनियम है। यह तीनों कार्यनियम एक साथ प्रकट नहीं होते, किन्तु इनमें क्रम पड़ता है अर्थात्

इनके वर्णन में भी भेद से जुदा-जुदा वर्णन किया है।

जो कारणनियमरूप स्वभावरत्नत्रय है, वह तो त्रिकाल एक साथ ही है। यह तेरी त्रिकाली ऋद्धि वर्तमान में भी तेरे पास पड़ी है; किन्तु तुझे अपनी शक्ति का भरोसा नहीं है; अत: बाहर के कारणों की शोध करता है।

आत्मा में कार्यमोक्ष का कारण मोक्षमार्ग है। वह मोक्षमार्ग कार्यनियम है और उसका कारण ध्रुवस्वभाव है, वह कारणनियम है। उसमें कार्यनियम है ह्न सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र अर्थात् रत्नत्रय। इन तीनों के स्वरूप का वर्णन करते हैं।

अब यहाँ सबसे पहले सम्यग्ज्ञान का स्वरूप बताते हैं - परद्रव्य का अवलम्बन लिये बिना नि:शेषपने अन्तर्मुख योगशक्ति में से उपादेय (उपयोग को पूर्णतया अन्तर्मुख करके ग्रहण करने योग्य) ऐसा जो निजपरमतत्त्व का परिज्ञान - वह सम्यग्ज्ञान है।

शरीर-मन-वाणी अथवा देव-गुरु-शास्त्र इत्यादि किसी भी परद्रव्य का अवलम्बन लिये बिना अन्तर्मुख जो निजपरमात्मतत्त्व का ज्ञान है, वही सम्यग्ज्ञान है। पर-सन्मुख भाव टालकर नि:शेषरूप से चैतन्य भगवान आत्मा में ही अन्तर्मुख होकर उपादेयरूप परम आत्मतत्त्व का जानना सम्यग्ज्ञान है। रागादि के अवलम्बन से सम्यग्ज्ञान नहीं होता। परलक्षी ज्ञान मोक्ष का कारण नहीं है। मोक्ष का कारण तो अन्तर्मुख उपयोग से सीधा आत्मा का ज्ञान करना है। किसी भी पर का अवलम्बन लेकर जो ज्ञान हो, वह तो पर का जानपना है। पर के अवलम्बन से निरपेक्ष आत्मतत्व का ज्ञान नहीं होता।

शास्त्र के अवलम्बन से होनेवाला ज्ञान मोक्षमार्ग नहीं है; किन्तु जिसमें किसी भी परद्रव्य का अवलम्बन नहीं ऐसे अन्तर्मुख निजात्मतत्व का ज्ञान ही मोक्षमार्ग है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र मोक्षमार्ग है - ऐसा तो सभी कहते हैं; परन्तु उनका स्वरूप क्या है, वह यहाँ बताया जा रहा है।

चैतन्य के आश्रय से ही मेरा ज्ञान होता है; किन्तु पर के अवलम्बन से मेरा ज्ञान नहीं होता ह्न ऐसा जानकर, उपादेयरूप निज परमात्मस्वभाव में उपयोग लगाकर जो जानना हो, उसका नाम सम्यग्ज्ञानरूपी नियम है। जहाँ ध्रुवस्वभाव में उपयोग लगाया, वहाँ निज परमात्मतत्त्व ही उपादेय हुआ, ऐसे उपादेयरूप निज परमात्मतत्त्व का परिज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है। बाह्य में दूसरे परमात्मा का ज्ञान करना तो शुभराग में जाता है। अन्तर

में स्वसन्मुख उपयोग करके निज ध्रुव परमात्मतत्त्व का ज्ञान होना ही सम्यग्ज्ञान है और वह नियम से मोक्षमार्ग है। अकेले ध्रुव चैतन्य स्वभाव में उपयोग को लगाकर जो आत्मा का ज्ञान हुआ, वही सम्यग्ज्ञान है। सम्यग्ज्ञान में उपादेयता तो निज परमशुद्ध आत्मा की ही है। ज्ञान अन्दर में झुका, तब उसमें अकेला परमात्मद्रव्य ही उपादेय रहा; निमित्त, विकल्प या व्यवहार उपादेय नहीं रहा। शास्त्र ऐसे ही आत्मस्वभाव को उपादेय बताते हैं। ऐसे आत्मा को अन्तर्मुख होकर जानें; तभी शास्त्र-पठन सच्चा कहा जाये; किन्तु यदि निज परमात्मतत्त्व के अतिरिक्त राग को, निमित्त को अथवा व्यवहार को उपादेय मानकर अटक जाये तो उसका शास्त्र-पठन भी सच्चा नहीं है।

अन्तर्मुख उपयोग करके निरपेक्ष निरावलम्बी परम चैतन्य तत्त्व को जानें, तभी सम्यग्ज्ञान हो और उसके शास्त्र ज्ञान को व्यवहार ज्ञान कहा जाये। ऐसे निज परमात्मतत्त्व का अन्तर्मुख सम्यग्ज्ञान ही मोक्षमार्ग है। यहाँ नियमरूप मोक्षमार्ग बताना है, इसलिये व्यवहार की बात नहीं ली गई है; क्योंकि व्यवहार वास्तव में मोक्षमार्ग है ही नहीं।

अब सम्यग्दर्शन का स्वरूप कहते हैं ह्न भगवान परमात्मा के सुख के अभिलाषी जीव को शुद्ध अन्तस्तत्त्व के विलास का जन्मभूमिस्थान जो निजशुद्ध जीवास्तिकाय उससे उत्पन्न परमश्रद्धान ही दर्शन है।

सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा भी व्यवहार श्रद्धा है तो फिर कुदेव-कुगुरु को माने उसकी तो बात ही कहाँ रही ? जैसे सम्यग्ज्ञान में मात्र निज परमात्मा का अवलम्बन है, वैसे ही सम्यग्दर्शन में भी अकेले आत्मा का ही अवलम्बन है।

ये सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों परम निरपेक्ष हैं, यह बात पहले बहुत स्पष्ट हो चुकी है। सम्यग्दर्शन शुद्ध जीवास्तिकाय के आश्रय से ही उत्पन्न होता है। सम्यग्दर्शन किसको होता है ? जो जीव भगवान परमात्मा के सुख के अभिलाषी है अर्थात् जिन्हें चतुर्गति की अभिलाषा नहीं है; स्वर्ग में इन्द्र पद के सुख की अभिलाषा नहीं है अर्थात् स्वर्ग में अपना सुख है ही नहीं, सुख तो अपने परमात्मस्वभाव में ही है, मेरे चैतन्य के अतिरिक्त अन्य किसी पदार्थ में मेरा सुख नहीं है; इसप्रकार जिसको अपने भगवान परमात्मा के सुख की अभिलाषा है ह्न ऐसे जीव को शुद्धअन्तस्तत्त्व के विलास का जन्मस्थान निज शुद्ध जीवास्तिकाय की श्रद्धा से सम्यग्दर्शन होता है। **(क्रमश:)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है, उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

स्वयं ज्ञानस्वरूप है, उसका ज्ञान एवं अपने निजस्वरूप का अस्तित्व स्वीकार न करके जो अपने नहीं हैं - ऐसे देह-मन-वाणी, इन्द्रियाँ और पुण्य-पाप के भावों का ज्ञान करने में रुकना मिथ्याज्ञान है। आत्मज्ञान बिना कदाचित् ग्यारह अंग और नौ पूर्व का ज्ञान हो जाय तो उससे क्या लाभ ? आत्मज्ञान के बिना इनकी कुछ भी कीमत नहीं है।

एक ज्ञायकभाव में लीन होकर न रहना तथा शुभाशुभभाव में लीन होकर रहना मिथ्याचारित्र है। आत्मा व अनात्मा के ज्ञान (भेदज्ञान) बिना ही जो क्रिया होती है, वह मिथ्याचारित्र है।

प्रश्न - शुभराग से शुद्धता का अंश प्रगट होता है या नहीं ?

उत्तर - भाई ! ऐसा नहीं है। शुद्धता का अंश तो स्व-आश्रय से प्रगट होता है, जबकि शुभराग पराश्रय का भाव है; क्योंकि शुभभाव पर के लक्ष्य से होता है।

देखो, कहते हैं कि जिनको शुद्ध चिदानन्दघनप्रभु आत्मा की दृष्टि और उसका ज्ञान तथा रमणता हुई है, उन धर्मी जीवों को अपनी भूमिका के योग्य व्यवहार दर्शन-ज्ञान-चारित्र नियम से होता है। व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप शुभराग की मन्दता के प्रकर्ष की परम्परा (क्रमप्रवाह) धर्मी के अवश्य होती है। सच्चे देव-शास्त्रा-गुरु की श्रद्धा का शुभराग तथा नवतत्त्व की भेदरूप श्रद्धा का विकल्प व्यवहार सम्यग्दर्शन है। सत् शास्त्राों का, श्रुत का विकल्पात्मक यथार्थ जानपना व्यवहार सम्यग्ज्ञान है। तथा अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों के

विकल्प व्यवहारचारित्रा हैं। धर्मी को जैसे-जैसे स्वद्रव्य का आश्रय बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उतने ही प्रमाण में व्यवहाररत्नत्राय के राग की मन्दता का प्रकर्ष होता जाता है अर्थात् शुभराग घटता जाता है और वीतरागीदशा बढ़ती जाती है।

एक ओर निर्विकल्प दृष्टि, ज्ञान व रमणता है और दूसरी ओर व्यवहारचारित्रा आदि के विकल्प हैं। धर्मी को दोनों साथ-साथ - सहचररूप से होते हैं।

शास्त्रा में ऐसा उल्लेख होने से इस बात का निश्चय होता है।

यहाँ किसी को ऐसी शंका होती है कि - व्यवहार से निश्चय होता है, व्यवहार निश्चय का कारण है; परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि भूमिका अनुसार धर्मी को व्यवहार होता अवश्य है। उसी उपचार का ज्ञान शास्त्राों में कराया है। भाई ! शास्त्राों में जो कथन जिस अपेक्षा से किया हो, उस कथन की अपेक्षा को समझने से प्रश्न खड़े नहीं होंगे।

सुनिश्चलपने ग्रहण किया व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रा राग की मन्दतारूप है और निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रा वीतरागीदशा है तथा यही सत्यार्थरूप साधकपणा है। छठवें गुणस्थान में मुनिराज को ऐसी निश्चय साधकदशा प्रगट होती है और उनके इसी भूमिका में सहचर व्यवहाररत्नत्रायरूप शुभभाव अवश्य होता है। यद्यपि वह शुभभाव है तो बन्ध का ही कारण; तथापि जब उत्कृष्ट भाव से अबन्ध परिणाम नहीं होता, तब ऐसा बन्ध परिणाम होता है।

प्रश्न - शास्त्र में जो 'ज्ञानक्रियाभ्याम् मोक्षः' - कहा है, उसका क्या अर्थ है ?

उत्तर - हाँ, यह प्रश्न बहुत अच्छा है; पर ध्यान रहे अकेला परावलम्बी शास्त्रा का ज्ञान और राग की क्रिया मोक्ष का कारण नहीं है। इसके विपरीत स्व-आश्रय से प्रगट हुआ स्वरूप का ज्ञान, स्व-संवेदनज्ञान ही ज्ञान है तथा स्वरूप में रमणता-लीनता क्रिया है - ऐसे ज्ञान और क्रिया से मोक्ष होता है - यह उपर्युक्त सूत्रा में कहा है।

पुरुषार्थसिद्धयुपाय में आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने कहा है कि - आत्मा का निर्विकल्प सम्यग्दर्शन-स्वसंवेदनज्ञान और 'स्व' में लीनता मोक्ष का कारण है तथा नवतत्त्व की भेदरूप श्रद्धा व्यवहारसम्यग्दर्शन, शास्त्राज्ञानरूप व्यवहारज्ञान तथा पंच महाव्रत के रागरूप व्यवहारचारित्रा - ये सब रागरूप होने से अपराध

हैं। अरे ! जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, वह शुभभाव भी अपराध है। जो भाव अपराध है, वह मोक्ष का कारण कैसे हो सकता है ?

जब ज्ञानी व्यवहार के विकल्पों को छोड़कर स्वयं चिदानन्दघनस्वरूप में आरोहण करता है, लीन होता है, तब उसके स्वरूप की श्रद्धा-ज्ञान-रमणतापूर्वक पर्वत से झरने की भांति अनाकुल आनन्द का झरना झरता है, अन्तर में शान्ति की धारा प्रवाहित होती है। इसे ही भगवान मोक्षमार्ग कहते हैं।

समयसार गाथा 12 में कहा है कि - स्व-आश्रय से स्वरूप का ज्ञान, आत्मज्ञान हुआ है; परन्तु वर्तमान पर्याय में पूर्ण शुद्धता, पूर्णज्ञान (केवलज्ञान) प्रगट नहीं है और निचलीदशा है - ऐसे जीवों के जो अशुद्धता का विकल्प होता है, उसे वह मात्रा जानता ही है। इसी का नाम व्यवहारनय है, जो मात्रा जानने के लिए प्रयोजनवान है। इस व्यवहार के पक्ष के कारण अज्ञानी ने अनन्तकाल से अबतक यह बात लक्ष में ली ही नहीं।

अहा ! जिनको अन्तर में अपने भगवान आत्मा का भान हुआ है, स्वरूप की श्रद्धा-ज्ञान एवं रमणता प्रगट हुई है, प्रचुर अतीन्द्रिय आनन्द के झूले में झूलते हैं, सिंह की भाँति जंगल में रहते हुए प्रचण्ड पुरुषार्थ के धारक ऐसे महामुनिराज को भी जबतक पूर्णदशा प्रगट नहीं हुई, तबतक सहचरपने व्यवहार दर्शन-ज्ञान एवं महाव्रत के विकल्प होते हैं। उसके वे मात्रा ज्ञाता रहते हैं तथा उसे छोड़कर स्वरूप में आरोहण करते हुए निश्चय स्थिरता को प्राप्त होते हैं।

जो आनन्द का नाथ आत्मप्रभु अन्दर में विराजता है, उसमें आरोहण करना ही सच्ची यात्रा है। शेष सिद्ध, तीर्थक्षेत्रों की यात्रा तो सब शुभभावरूप ही है। वह तो उपचारमात्र यात्रा है। उपचार भी तभी लागू होता है, जब अन्तर्यात्रा हो जाय।

भाई ! शुभरागरूप होना साधकपना नहीं है तथा व्यवहार के विकल्प से भी साधकपना प्रगट नहीं होता। राग का त्यागकर अन्तर में जाये बिना संसारपरिभ्रमण का अन्त नहीं आता। ये सेठ लोग जो खूब दान करते हैं न! इनका यह करोड़ों का दान एवं दान का शुभपरिणाम मुक्तिमार्ग में कुछ भी साथ नहीं आता। विभाव से विमुख होकर निजानन्द स्वरूप के ज्ञान-श्रद्धान एवंलीनता ही एकमात्रा मोक्षमार्ग है और यही साधकदशाहै। (क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : शुद्ध-अशुद्ध पर्यायों के पिण्ड को द्रव्य कहा है न ?

उत्तर : वह तो निश्चयाभासी जीव पर्याय को सर्वथा मानता ही नहीं है, उस अपेक्षा से उसे समझाने के लिये शुद्ध-अशुद्ध पर्यायों का पिण्ड सो द्रव्य है ह्न ऐसा कहा है; परन्तु उससे द्रव्य में शुद्ध-अशुद्ध पर्यायें वर्तमानरूप से विद्यमान हैं ह्न ऐसा कहने का तात्पर्य नहीं है। द्रव्य तो शक्तिरूप से अकेला पारिणामिकभावरूप ही है; जो पर्याय को सर्वथा नहीं मानता, उससे कहते हैं कि भविष्य की पर्याय द्रव्य में शक्तिरूप है और भूत की पर्याय योग्यतारूप है। पर्यायें सर्वथा है ही नहीं ह्न ऐसा नहीं है; इतना जानने के लिये कहा है।

प्रश्न : पर्याय को नहीं मानने से तो एकान्त हो जाता है न ?

उत्तर : 'पर्याय है ही नहीं' ह्न ऐसा नहीं है। जो श्रद्धा करती है, जानती है, स्थिरता करती है; वह पर्याय ही है; परन्तु पर्याय का आश्रय करना विपरीतता है। चैतन्य सामान्य का आश्रय करने के लिये पर्याय को गौण करके निषेध किया जाता है; परन्तु उससे पर्याय पर्यायरूप में सर्वथा है ही नहीं - ऐसा नहीं है।

एकरूप ध्रुव सामान्य द्रव्य परमशुद्धनिश्चयनय का विषय है, उसमें निर्मल पर्याय को मिलाकर देखना मेचकपना होने से अशुद्धनय का विषय है, मलिनता है, सोपाधिक है, वह सम्यग्दर्शन का विषय नहीं है।

एक देखिये जानिये, रमि रहिये इक ठोर।
समल-विमल न विचारिये, यहै सिद्धि नहीं और ।।

एकरूप ध्रुव चैतन्य ही सम्यग्दर्शन का विषय है। शरीरादि नोकर्म को तथा द्रव्यकर्म को बाह्यतत्त्व कहना हो, तब राग को स्वतत्त्व कहा जाता है; जब राग को बाह्यतत्त्व कहना हो, तब निर्मलपर्याय को स्वतत्त्व कहा जाता है; जब निर्मलपर्याय को बाह्यतत्त्व कहना हो तब त्रिकालीद्रव्य को स्वतत्त्व कहा जाता है; राग या निर्मल पर्याय की अपेक्षा से बाह्य तत्त्व या स्वतत्त्व दोनों कहे जाते हैं, परन्तु त्रिकाली ध्रुव द्रव्य को तो सर्वथा प्रकार से स्वतत्त्व ही कहा जाता है और वह एक ही दृष्टि का विषय होने से उपादेय है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

द्रोणगिरि (छतरपुर–म.प्र.) : श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 2003 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के सहयोग से आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के समयसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ़, पण्डित शीतलजी शास्त्री नौगाँव एवं पण्डित गुलाबचन्दजी जैन भोपाल आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ भी समाज को मिला।

इस अवसर पर दिनांक 28 दिसम्बर, 2003 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता फैडरेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अखिलजी बंसल जयपुर ने की तथा मुख्य अतिथि श्री संदीपजी सौगाणी भोपाल, विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्रभानजी जैन घुवारा, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी तथा फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर थे। इनके अतिरिक्त इन्जी. विनोदजी निरखे मलकापुर, इन्जी. सुनीलजी बड़कुल छतरपुर, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री बरायठा, पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर आदि भी मंचासीन थे।

अधिवेशन में राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने फैडरेशन की गतिविधियों का विस्तार से परिचय दिया एवं श्री अखिलजी बंसल ने अपने उद्‌बोधन में नवयुवकों को फैडरेशन से जुडने की प्रेरणा देते हुये संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी ने फैडरेशन के कार्यकलापों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। संगठन को मजबूत बनाने हेतु पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री को संगठन–मंत्री का दायित्व सौंपा गया तथा श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने निकट भविष्य में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शीघ्र ही अनेक उत्साही कार्यकर्ताओं का समावेश करने की ओर इशारा किया।

अधिवेशन में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की सिद्धायतन, शाहगढ़, जबलपुर, ललितपुर, गुना, कोलारस, रायपुर आदि विभिन्न शाखाओं से आये प्रतिनिधियों ने अपनी–अपनी वार्षिक रिपोर्ट एवं विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने किया। मंगलाचरण पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर एवं आभार प्रदर्शन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री रतनलालजी सौगाणी परिवार, भोपाल द्वारा 64 ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया। विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी धवल, भोपाल एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर ने सम्पन्न कराये। शिविर का उद्‌घाटन श्री आलोककुमारजी जैन, कानपुर ने किया। **– मस्ताई प्रेमचन्द जैन (मन्त्री)**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

पोन्नूरमलई (तमिलनाडू): यहाँ पर दिनांक 30 दिसम्बर, 2003 से 1 जनवरी, 2004 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूजन के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के टेप प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. हेमचन्दजी हेम देवलाली, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि विद्वानों के समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला आदि विषयों पर प्रवचन, कक्षा एवं तत्त्वचर्चा का लाभ आगन्तुक एवं स्थानीय मुमुक्षुओं को प्राप्त हुआ।

क्षेत्रिय विद्वानों में पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, पण्डित उमापतीजी शास्त्री, पण्डित सुभाषजी शास्त्री एवं पण्डित पारसनाथजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

सभी कार्यक्रम ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियाधांना के प्रतिष्ठाचार्यत्व तथा पण्डित हेमन्तभाई गांधी के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुये।

प्रतिदिन रात्रि में श्री अरहंतगिरि छात्रावास तिरुमलै, राजकोट एवं अलीगढ के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन अनंतभाई एवं निमेशभाई परिवार, मुम्बई द्वारा किया गया। इस अवसर पर लगभग 5 हजार लोगों ने धर्मलाभ लिया। **ह्न बी.जी.श्रीपाल**

जिनमन्दिर का भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न

अलवर : श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल, श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा, अलवर द्वारा दिनांक 18 से 20 दिसम्बर, 2003 को श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर का भव्य शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर देश–विदेश में विख्यात **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रात: एवं रात्रि में सारगर्भित प्रवचन हुए। इसके अलावा पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री भरतपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी जैन उदयपुर एवं स्थानीय विद्वान करणानुयोग विशेषज्ञ पण्डित किशनचन्दजी जैन का भी उपस्थित श्रोताओं को प्रवचन व व्याख्यानों के माध्यम से धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 20 दिसम्बर को श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर का शिलान्यास श्री रतनलालजी वंदना प्रकाशन अलवाल, श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री रतनलालजी जैन अशोका रेडीमेड अलवर एवं श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला भवन का शिलान्यास श्रीमती सुमित्रादेवी धर्मपत्नी स्व.फूलचन्दजी जैन अलवर के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुए। इसी पावन प्रसंग पर श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व तथा ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री, अलवर के निर्देशन में पण्डित प्रेमचन्दजी जैन अलवर एवं पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री, कोटा ने सम्पन्न कराये।

सांस्कृतिक सप्ताह सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में नववर्ष के शुभअवसर पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु दिनांक 1 जनवरी से 8 जनवरी 2004 तक सांस्कृतिक सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

जिसमें **दिनांक 1 जनवरी** को मिस्टर स्मारक प्रतियोगिता में अभिषेक जैन, सिलवानी ने प्रथम एवं दीपेश जैन, गुढा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

2 **जनवरी** को 'कार्य निमित्त से या उपादान से ?' विषय पर उपाध्याय वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता में पक्ष से अंकुर जैन ने प्रथम एवं संतोष जैन, बक्स्वाहा ने द्वितीय तथा विपक्ष से कु. परिणती पाटील ने प्रथम एवं राहुल जैन, अलवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

3 **जनवरी** को भजन प्रतियोगिता में कु. परिणती पाटील जयपुर, निखिल जैन कोतमा एवं सुनील बेलोकर सुलतानपुर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

4 **जनवरी** को अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अमित जैन एवं जितेन्द्र यादव, द्वितीय स्थान अभिषेक जैन एवं अनुपम जैन तथा तृतीय स्थान रोहन जैन एवं अनुज जैन ने प्राप्त किया।

५ **जनवरी** को 'विश्वशांति अहिंसा से या हिंसा से ?' विषय पर शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता में पक्ष से अभिषेक जैन सिलवानी ने प्रथम एवं जितेन्द्र यादव बानपुर ने द्वितीय तथा विपक्ष से जितेन्द्र चौगुले ने प्रथम एवं वरूण शाह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

6 **जनवरी** को कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम ज्ञायक जैन राजकोट, द्वितीय आशीष जैन जबेरा एवं रविन्द्र काले कारंजा तथा तृतीय राहुल जैन एवं अर्पित जैन बडामलहरा रहें।

7 **जनवरी** को श्लोक-पाठ प्रतियोगिता में अभिषेक जैन सिलवानी एवं आदित्य जैन खुरई ने क्रमश: प्रथम व द्वितीय स्थान तथा राहुल जैन अलवर एवं दीपेश जैन गुढा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

8 **जनवरी** को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से राहुल जैन अलवर, कु. परिणती पाटील जयपुर एवं प्रसन्न शेटे कोल्हापुर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। तथा शास्त्री वर्ग से दीपेश जैन गुढा ने प्रथम, अभिषेक जैन सिलवानी व संभव जैन नैनधरा ने द्वितीय तथा आदित्य जैन खुरई ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अन्त में 15 जनवरी को विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया। सभी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों ने किया। **ह्न नीरज जैन, सौरभ जैन (मुख्य संयोजक)**

हॉस्पिटल का शिलान्यास एवं शिक्षण-शिविर सम्पन्न

पूना (महा.) : श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मण्डल, पूना द्वारा लीला चैरिटेबिल हॉस्पीटल के शिलान्यास महोत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर तथा श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं श्री शांति विधान का आयोजन दिनांक 12 दिसम्बर से 14 दिसम्बर, 2003 तक किया गया।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रात: एवं सायंकाल मार्मिक प्रवचन हुए। इसके अलावा ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित दिनेशभाई शाह व विदुषी डॉ. उज्ज्वलाजी शाह, मुंबई के प्रवचनों का लाभ भी उपस्थित श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

हॉस्पीटल का शिलान्यास श्री अनंतभाई सेठ के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न आदिनाथ मोनाप**

वेदी एवं निवृत्तिनिलय का शिलान्यास सम्पन्न

नई दिल्ली : अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड के प्रांगण में द्विदिवसीय शिलान्यास समारोह में दिनांक 10 दिसम्बर को प्रात: पंच परमेष्ठी मण्डल विधान के उपरान्त **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** का समयसार ग्रन्थ पर आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। दोपहर एवं रात्रि में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर प्रवचन हुये।

11 दिसम्बर को डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् आयोजित शिलान्यास सभा की अध्यक्षता श्री शेखरचंदजी जैन ने की। सभा का संचालन पण्डित राकेशजी शास्त्री ने किया।

सभा के बाद 1008 श्री महावीर भगवान, शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ भगवान, आदिनाथ एवं चन्द्रप्रभ भगवान की वेदियों के अलावा निवृत्तिनिलय के सत्य-संयम-शील खण्डों का शिलान्यास हुआ।

महोत्सव की मंगल विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन व बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पं. ज्ञानचन्दजी ललितपुर, पं. ऋषभजी उस्मानपुरा, पं. प्रदीपजी धामपुर, पं. संदीपजी शास्त्री एवं पं. अमितजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराई गई। **ह्न आदीश जैन**

विधान एवं शिविर सानन्द सम्पन्न

वाशिम (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जवाहर कॉलोनी में दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2003 तक पाटनी परिवार वाशिम द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर तथा झांझरी परिवार की ओर से 24 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सम्पूर्ण विधि-विधान पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा कराये गये तथा दोपहर में आपके द्वारा शंका-समाधान एवं रात्रि में अनुभूति की प्रक्रिया विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

इसी प्रसंग पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। दोपहर में आपके द्वारा परमभावप्रकाशकनयचक्र की कक्षा ली गई।

सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। विधान के उपलक्ष में झांझरी परिवार की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं नागपुर ट्रस्ट को कुल 16 हजार रुपये की दान राशी प्रदान की गई। **– संतोष पाटनी**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

मुंबई : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन चैत्यालय, एवरशाईन नगर, मलाड़ (पश्चिम) में पुराने चैत्यालय को विस्तार देकर निर्मित स्वर्णजडित नवीन वेदी पर भगवान महावीर की पाषाण एवं भगवान आदिनाथ व भगवान सीमन्धरस्वामी की धातु की प्रतिमायें विराजमान करने हेतु 6 से 8 दिसम्बर, 2003 तक त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समाज के विशेष आग्रह से पधारे **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर** के प्रात: एवं रात्रि में समयसार कलश-15 तथा गाथा-16 के आधार से मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों से पूर्व पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर के भी प्रवचन हुये तथा दोपहर में पण्डित पदमचन्दजी सर्राफ, आगरा के प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने पं. अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर एवं श्री राकेशजी, ग्वालियर के सहयोग से सम्पन्न कराए।

जैनधर्म के व्याख्यान अब अहिंसा चैनल पर भी

सैटेलाइट जगत में जैनसमाज के धर्मलाभार्थ गाँधी जयन्ति के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2003 से अहिंसा चैनल (फ्री टू एयर चैनल) का प्रसारण प्रारंभ हो चुका है, जिसपर जैनधर्म के अहिंसा, शाकाहार, अनेकान्तवाद आदि विविध विषयों पर मुनिश्री क्षमासागरजी(सायं 7 बजे), आचार्य महाप्रज्ञजी आदि अनेक साधुसंतों तथा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। इस चैनल का प्रसारण 24 घंटे होता है।

वर्तमान में यह चैनल 15 राज्यों के पटना, दरभंगा, गिरिडीह, राची, कोलकाता, पानीपत, फरीदाबाद, हिसार, दिल्ली, लुधियाना, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, ललितपुर, फिरोजाबाद, देहरादून, गाजियाबाद, हरिद्वार, कानपुर, कासगंज, अलीगढ़, लखनऊ, मथुरा, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, नोएडा, सहारनपुर, मेरठ, वाराणसी, ऋषिकेष, बिलासपुर, जगदलपुर, भिलाई, दुर्ग, अहमदाबाद, भटींड़ा, वापी, भुसावल, लातूर, मुम्बई, भोपाल, हरदा, होशंगाबाद, इन्दौर, कटनी, नरसिंहपुर, नीमच, रायसेन, रतलाम, सागर, सतना, सीहोर, शहडोल, विदिशा आदि अनेक स्थानों पर लाखों परिवारों द्वारा देखा जा रहा है।

जिन स्थानों पर ये चैनल नहीं आ रहा है, वे अपने केबल ऑपरेटर को निम्न सूचना देकर प्रारम्भ करा सकते हैं। इस चैनल का कोई चार्ज नहीं लगता; यह निःशुल्क चैनल है।

Satellite	:	INSAT (Expanded Coverage 93.5^0E)
Polarisation	:	Vertical
Downlink Prequcney	:	3915.5 MHz-3920.0 MHz
FEC	:	3/4
Symbol Rate	:	3030 KSPS

किसी भी सूचना/समस्या के समाधान हेतु निम्न पते पर संपर्क करें –

A.T.N. इन्टरनेशनल लिमिटेड,
10, प्रिसेप स्ट्रीट IInd फ्लोर, कोलकाता ह्न 32
फोन : 033-22256851-52, फैक्स : 22379053
Email : info@ahimsaatv.com, Website : www ahimsaatv.com

नोट : ज्ञातव्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8.30 से 9.00 बजे** तक प्रसारित हो रहे हैं।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

02 से 06 फरवरी, 2004	अलीगढ़	आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर
07 से 11 फरवरी, 2004	इन्दौर	आध्यात्मिक शिविर एवं विधान
14 से 16 फरवरी, 2004	जयपुर	विद्वत संगोष्ठी(राज. विश्वविद्यालय)